

गांधी युग| गांधीजी| दक्षिण अफ्रीका| निबंध एवं चर्चा [pdf]

हिंदुस्तान में गांधी का उद्भव भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में एक ऐतिहासिक क्षण है जिसके बारे में प्रत्येक मनुष्य को जानना अति आवश्यक है, यह एक विचारधारा है जिसने लोगों के भीतर कैसे परिवर्तन किया, गांधी जी 1915 में, दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे | अपने शुरूआती वर्षों के दौरान, उन्होंने अपना समय अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में बिताया, जो आम जनता के लिए अपेक्षाकृत अज्ञात था आज का लेख गांधी युग, गांधीजी, तथा दक्षिण अफ्रीका पर आधारित है |

इन्होंने अपना राजनीतिक रुख अपनाने के लिए, गोपाल कृष्ण गोखले से सलाह मांगी, गोखले ने गांधीजी को सलाह दी कि वे पहले देश की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति पर गहन शोध करें और फिर उसके अनुसार कार्य करें, हालाँकि, कई स्थानीय संघर्षों में अपने सक्षम नेतृत्व के परिणाम स्वरूप गांधीजी तेजी से राजनीतिक क्षेत्र में प्रमुखता से उभरे |

गांधी युग तथा गांधीजी के प्रारंभिक जीवन का इतिहास :-

2 अक्टूबर, 1889 को मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म गुजरात की काठियावाड़ रियासत के पोरबंदर में हुआ था, उनके पिता राज्य दीवान (मंत्री) थे | इंग्लैंड में कानून की पढ़ाई करने के बाद, इन्होंने 1893 में अपने मुवक्किल दादा अब्दुल्ला से जुड़े एक मामले के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की थी।

दक्षिण अफ्रीका में, गांधीजी ने नस्लवाद का घिनौना चेहरा देखा, साथ ही उन एशियाई लोगों की भी अपमान और अवमानना का सामना करना पड़ा जो मजदूर के रूप में अफ्रीका आये थे कुछ दिनों के बाद, गांधीजी ने भारतीय श्रमिकों को संगठित करने और उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ने में सक्षम बनाने के लिए अफ्रीका में ही रहने का फैसला किया।

गांधीजी ने अपने जीवन के 20 वर्ष (1893 -1914) दक्षिण अफ्रीका में एक वकील और एक सार्वजनिक कार्यकर्ता के रूप में काम करते हुए बिताये तथा वहाँ उन्होंने सत्याग्रह का विचार विकसित किया और इसे एशियाई पंजीकरण कानून के लिए इस्तेमाल किया। इसके परिणाम स्वरूप महात्मा गांधी को जीवन में पहली बार जेल भी जाना पड़ा था |

हालाँकि यह उन्हें दक्षिण अफ्रीका के सबसे प्रभावशाली और सम्मानित नेताओं में नहीं रोका इसके बाद वह 1914 में भारत लौटने तक वहीं रहे।

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी का सत्य के साथ प्रयोग :-

- 1- यहां भारतीयों को तीन समूह में विभाजित किया गया था,।
- 2- गिरमिटिया भारतीय मजदूर, मुख्य रूप से दक्षिण भारत से, जो 1890 के बाद चीनी बागानों में काम करने के लिए दक्षिण अफ्रीका चले गये थे ।
- 3- व्यापारी ज्यादातर मेमन मुसलमान थे जो मजदूरों का अनुसरण करते थे।
- 4- पूर्ण –गिरमिटिया मजदूर जो अपने अनुबंध समाप्त होने के बाद अपने बच्चों के साथ दक्षिण अफ्रीका में बस गये थे।
- 5- ये भारतीय अधिकतर अशिक्षित थे और बहुत कम या बिलकुल अंग्रेजी नहीं बोलना जानते थे तथा उन्होंने नस्लीय भेदभाव को जीवन का हिस्सा मान लिया था।
- 6- इन भारतीय अप्रवासियों को कई प्रकार की बाधाओं से जूझना पड़ा।
- 7- उन्हें वोट देने भी नहीं दिया गया ।
- 8- वे केवल निदृष्ट क्षेत्रों में रह सकते थे जो अस्वच्छ और भीड़- भाड़ वाले थे।
- 9- कुछ कालोनियों में एशियाई और अफ्रीकी लोग अँधेरा होने के बाद अपने घरों से बहार नहीं निकल सकते थे और न ही उन्हें सार्वजनिक फुटपातों का उपयोग करने की इजाजत थी ।

संघर्ष के चरण :-

संघर्ष का मध्यम चरण (1894- 1906):-

- 1- इस अवधि के दौरान, गांधीजी दक्षिण अफ्रीका और ब्रिटिश अधिकारियों की याचिकाओं और स्मारकों पर निर्भर रहे।
- 2- उन्हें उम्मीद थी कि एक बार अधिकारियों को भारतियों की दुर्दशा के बारे में अवगत करा दिया जायेगा तो वे उनकी शिकायतों को दूर करने के लिए वास्तविक कदम उठाएंगे, क्योंकि भारतीय, आखिरकार, ब्रिटिश विषय में थे ।
- 3- भारतियों के विभिन्न वर्गों को एक जुट करने के लिए, उन्होंने नेटल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की और इंडियनओपेनियन अखबार भी निकाला था।

गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में किस कांग्रेस का गठन किया था?

उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में, वर्ष 1894 में, नटाल भारतीय कांग्रेस की स्थापना की थी इसके साथ-साथ गांधीजी एक अखबार भी निकाला था जिसका नाम **Indian opinion** था।

दक्षिण अफ्रीका में कितने समूह में भारतीय मजदूरों को बांटा गया था?

यहां भारतीयों को तीन समूह में विभाजित किया गया था

गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में कितने वर्षों तक रहे?

20 वर्ष (1893 -1914) दक्षिण अफ्रीका में एक वकील और एक सार्वजनिक कार्यकर्ता के तौर पर बिताये।

गांधी जी का जन्म किस रियासत में हुआ था?

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म गुजरात की काठियावाड़ रियासत के पोरबंदर में हुआ था।

भारत में गांधी युग कब से माना जाता है?

गांधी जी 1915 में, दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे थे तभी से गांधी युग माना जाता है।